आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 3/सितंबर 2024
Received: 15/09/2024; Accepted: 17/09/2024; Published: 26/09/2024

प्रेम परंपरा और आधुनिकता 'कनुप्रिया' के विशेष संदर्भ में

- केसरबेन राजपुरोहित
अतिथि व्याख्याता, हिंदी विभाग
मालाबार क्रिश्चियन कॉलेज, कालीकट
मो - 9207433926
ई मेल - kesarclt@gmail.com

केसरबेन राजपुरोहित, **प्रेम परंपरा और आधुनिकता 'कनुप्रिया' के विशेष संदर्भ में**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 3/सितंबर 2024, (223-227)

शोध सार

राधा और कृष्णा नर-नारी के प्रतीक है। स्त्री और पुरुष के साहचर्य से ही सृष्टि का विकास संभव है। संघर्ष के बाद विफलताओं से थककर जब कृष्ण इतिहास को त्याग कर राधा के पास आने के लिए व्याकुल होते हैं, वही है स्वयं के व्यक्तित्व की तलाश। तब राधा भी सब कुछ त्यागकर कृष्ण के साथ खड़ी हो जाती है। वह जानती है उसके बिना कृष्ण अपूर्ण है। भारतीजी ने 'कनुप्रिया' खण्डकाव्य में राधा के माध्यम से नारी मन के प्रश्नों और जिज्ञासाओं को वाचा देकर उन्हे नए अर्थबोध के साथ जोड़ा है। साथ ही जीवन में रागात्मक संबंध के महत्व को समझाने का प्रयास भी किया है। मनुष्य की सामान्य ज़रूरतें रोटी, कपड़ा और मकान है। लेकिन मानवता के विकास के लिए तर्क और बुद्धि के साथ रागात्मक संबंधों का होना भी आवश्यक है। युद्ध से सब कुछ जीता नहीं जा सकता। अंत में अवसाद ही हाथ लगता है। तभी तो कहा गया कि "क्षणभर की तन्मयता का मूल्य भी बहुत बड़ा है। उसे भुलाकर सार्थक बिंदु की तलाश अर्थहीन है। कारण सारी समस्याओं का हल कोरी बुद्धि के बल पर ही नहीं निकाला जा सकता है। मानवता के लिए, विविध मानवीय समाधानों के लिए रागात्मक मूल्य भी न केवल अनिवार्य होते हैं, अपितु अपरिहार्य भी होते हैं।"[1] आधुनिक समय में जिस तेजी से सभ्यता

का विकास हो रहा है, उसीके साथ मानवीय संबंध शिथिल होते जा रहे हैं। व्यक्ति यांत्रिक बनता जा रहा है। ऐसे में हृदय की संवेदना का सूख जाना स्वाभाविक है। समयानुसार परिवर्तन होता है। लेकिन आज परिवर्तन बिखराव के रूप में हो रहा है। जटिलता कई प्रश्नों को जन्म दे रही है। धर्मवीर भारती जी राधा के माध्यम से बताते हैं कि विकट स्थितियों में भी एक-दूसरे के प्रति समर्पण और अनन्यता रिश्तों का आधार बन सकते हैं। आज संबंधों की अहमियत घट रही है। कृत्रिमता, अवसरवादिता, स्वार्थपरता, औपचारिकता की नींव पर रिश्ते बनने लगे हैं। कमजोर नींव पर बने रिश्तों में संशय, अविश्वास होना स्वाभाविक है। आधुनिक नारी अपने अधिकारों के प्रति सजग है, अपने फैसले स्वयं लेने में सक्षम है। पुरुष को सर्वस्व मानकर सर्वस्व न्यौछावर करने पर भी जब पुरुष उसे सत्ता और शक्ति के लिए भुला बैठता है तब वह आतंकित हो जाती है। लेकिन अंत में सब कुछ भुलाकर होलोतों को सहेज लेना भी स्त्री की प्रकृति है।

उद्देश्य

आधुनिकता एक गतिशील प्रक्रिया है। जो बये परिवर्तनों को आत्मसात करते हुए अनवरत चलती रहती है। स्त्री के बिना पुरुष शक्तिहीन है। अर्थात् दोनों को समान रूप में कर्तव्यों को निभाते रहना आवश्यक है। प्रेम में आत्मसमर्पण ही उसकी महिमा बढ़ाता है। स्वार्थभरे रिश्तों की उम्र लंबी नही हो सकती। कनु ने युद्ध और प्रेम में युद्ध को चुना। लेकिन आखिर में तो उसे राधा के पास ही लौटना पड़ा। जीवन में रागात्मक संबंध सर्वोपरी होते हैं। जिसके बिना व्यक्ति का विकास भी अवरुद्ध होने की संभावना है।

प्रस्तावना

हमारे देश में कृष्ण काव्य की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। संस्कृत में लिखे गाथा शप्तसती में महाकवि हाल ने कृष्ण के जीवन से संबंधित अनेक कथाओं का वर्णन किया है। स्वयंभू ने अपभ्रंश में हरिवंश पुराण की रचना की। जिसमें श्री कृष्ण से संबंधित कथाएँ हैं। जयदेव ने गीतगोविंद नामक कृष्ण काव्य की रचना की। मैथिली कोकिल विद्यापति ने पदावली में राधा-कृष्ण से संबंधित विलक्षण पदों की रचना की। आधुनिक युग में भी कृष्ण काव्य की परंपरा अनवरत चलती रही। राधा-कृष्ण के प्रेम के विविध आयामों को कवियों ने अपनी लेखनी का विषय बनाया है। अयोध्याय सिंह उपाध्याय हरिऔंध ने प्रिय प्रवास में राधा के अलग व्यक्तित्व को निखारा है। जिसमें राधा अपने व्यक्तिगत सुख को त्याग कर कृष्ण को जगत कल्याण के लिए जाने की प्रेरणा देती है। मैथिली शरण गुप्त जी ने द्वापर और विष्णुप्रिया जैसी कृतियों की रचना की। धर्मवीर भारती ने 'कनुप्रिया' में कृष्ण और राधा के प्रेम का आधुनिक रूप अंकित किया है।

कृष्ण के साथ बिताए हुए पल राधा के स्मृतिपटल पर सदा प्रवाहमान हैं। उससे जो चित्र उभरते हैं वह कभी राधा को मीठी-सी पीडा दे जाते हैं, तो कभी सांत्वना का एहसास दे जाते हैं। 'कनुप्रिया' खण्डकाव्य में राधा का आत्मकथन है। राधा-कृष्ण का प्रेम गहरा है। लेकिन समाज के कुछ बंधन भी है। कभी-कभार ऐसा होता है कि कृष्ण राधा को मिलने के लिए बुलाते है। लेकिन राधा चाहकर भी उनसे मिलने नहीं जा सकती। तब कृष्ण की उदासी आक्रोश में बदल जाती है। इसी आवेग में एक दिन कनु आम्र मंजरी को मसलकर पगडंडी पर फेंक देता है। देर से ही सही लेकिन राधा उससे मिलने आती है और यह दृश्य देखकर उसे एहसास होता है जैसे

कनु ने उसकी मांग भरी हो। तब राधा प्रश्न करती है कि इतना क्रोध क्यों? वह अपनी बात रखते हुए कहती है- "लाज मन की भी होती है /एक अज्ञात भय/ अपरिचित संशय/ आग्रह भरा गोपन/ और सुख के क्षण/ में भी गिर आने वाली निर्व्याख्या उदासी-"[2]

कहीं न कहीं कनुप्रिया की व्यथा का कारण उसकी मांग का सुनापन भी है। उसके प्रेम में आत्मसमर्पण और गहरी निष्ठा है। उसे प्रेम में किसी औपचारिकता की आवश्यकता नहीं है। लेकिन जो बात समाज की नजरों में सही न हो उससे अंत:करण भी प्रभावित होता है। कनु के प्रति उसका प्रेम किसी व्याख्या का मोहताज नहीं है। फिर भी सामाजिक द्रष्टिकोण से उसकी पीड़ा गहरी है। सुलमा जी ने सही कहा है- "किसी के प्रेम में पागल व्यक्ति का आंतरिक विश्वास जो कुछ भी हो परंतु समाज की दृष्टि में जब स्वीकार्य नहीं होता तो उसे व्यक्ति से प्रिय-पात्र के साथ उसके संबंधों को लेकर जिरह होती रहती है।"[3]

किसी भी बात को अनुभव के बिना सार्थकता मिलना आसान नहीं है। राधा ने कनु के प्रेम को अनुभव किया है। तभी वह आहत है फिर भी स्वयं को परिपूर्ण मानती है। राधा कभी पितृसत्तात्मक समाज से सवाल करती है। कभी स्वयं को प्रेम में समर्पित होकर भी विलुप्त होने से रोकती है। उसके मन में कई आशंकाएँ घेरा डालती है। राधा को यह भी लगता है कि कृष्ण ने अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए उसे एक सेतु समझा। इन सारे विचारों से स्वयं का अस्तित्व ही उसे अनुपयुक्त नज़र आने लगता है। फिर भी वह सवाल करती है- "सुनो कनु, सुनो /क्या मैं सिर्फ एक सेतु थी तुम्हारे लिए/ लीलाभूमि और युद्धक्षेत्र के /अलंध्य अंतराल में!"[4] राधा के ये प्रश्न ही आधुनिकता की निशानी है। वरना परंपरा के अनुसार तो स्त्री को सवाल करने का कोई अधिकार ही नहीं।

राधा का शाब्दिक अर्थ है आराधिका या आराधना करने वाली। अपने नाम के अनुरूप ही वह प्रेम में समर्पित है। वह कृष्ण के प्रति पूर्णतया समर्पित होकर ही स्वयं का आंतरिक अर्थ पाती है। लेकिन समग्र सृष्टि के प्रति भी उसके मन में करुणा और प्रेम का भाव है उसमें लोक कल्याण की भावना विद्यमान है। तभी तो कृष्ण युद्ध के महानायक बनने पर भी उसका अंत:करण कौंधता है। उसे लगता है कृष्णा निर्मम हो गए हैं, औपचारिक बन गए हैं। फिर भी खुद को सांत्वना देते हुए कहती है- "गर्व कर बावरी!/कौन है जिसके महान प्रिय की/ अठारह अक्षौहिणी सेनाएं हो?"[5]

कृष्ण की दृष्टि में युद्ध अनिवार्य है। जिससे इतिहास का नवनिर्माण होगा। लेकिन राधा की दृष्टि में प्रेम ही सर्वोपरी है। उसके मन में यह सवाल भी है कि कनु ने उसे नही बल्कि युद्ध को वरियता दी। युद्ध में जाते सैनिकों को देखकर राधा की अंतरात्मा दहल उठती है। यहा पुरुष और स्त्री के विचारों का मंथन है। महादेवी वर्मा 'युद्ध और नारी' में कहती हैं "युद्ध के लिए वीरों को जाता देखकर पुरुष सोचेगा, देश का कितना गुरु महत्व इनके सम्मुख है और स्त्री सोचेगी, कितने आर्तनाद से पूर्ण घर इनके पीछे है। एक कहेगा यह जा रहे हैं, क्योंकि इनका देश है; दूसरा कहेगा- यह जा रहे हैं, पर इनके स्नेहमयी पत्नी और बालक है।"[6]

कृष्ण के साथ बिताए पलों की स्मृति से कभी कनुप्रिया बिखर-सी जाती है। क्योंकि उसे कृष्ण के व्यवहार और व्यक्तित्व में अंतर्विरोध दिखाई देता है। इस कारण वह अधिक व्याकुल हो जाती है। उसे लगता है कृष्ण ने उसकी उपेक्षा की। जिसके कारण वह स्वयं को ठगा हुआ अनुभव करती हैं। स्वयं के अस्तित्व में भी उसे निराशा प्रतीत होती है। यह स्थिति राधा के मन की है। कनु तो अपने कर्मों मे अति व्यस्त है। यह सच है- "पुरुष कर्मों की बाढ़ में बहता हुआ प्रणय की मधुरिमा को भूल जाता है। स्त्री के पास बचती है मात्र उसकी विप्रलंधा की अवस्था। विगत प्रेम-संबंधों को वह कभी भुला नहीं पाती।"[7]

राधा कहती है कि उसे भी अर्जुन की तरह मोह हो गया है। उसका निवारण कृष्ण उसे भी समझाए। विडंबना यह भी है कि राधा के लिए दायित्व, राजनीति, कर्म-धर्म सारे शब्द निरर्थक है। उसे कनु के मुख से एक ही शब्द सुनाई दोता है- 'राधन'। वह स्वयं मथुरा की गलियों में मही के बदले 'श्याम ले लो' की रट लगाती है। कनु के मोह में वह सबके हास्य का पात्र बन जाती है। राधा का अस्तित्व कनु से ही है। राधा और कनु का प्रेम लौकिक प्रेम मात्र नहीं है। राधा के बिना कृष्ण सृष्टि के निर्माण की कल्पना भी नहीं कर सकते। राधा कृष्ण की शक्ति है। कनु की इच्छाओं की सृष्टि भी राधा ही है। वह कनु और अपने रिश्ते के बारे मे कहती है कि- "इस यात्रा का आदि न तो तुम्हें स्मरण है न मुझे/ और अंत तो इस यात्रा का है ही नहीं मेरे सहयात्री!"[8] यहा स्त्री-पुरुष के रिश्ते की गहराई का संकेत मिलता है। जो अनवरत चलती आ रही है। कई बार पुरुष स्त्री की उपेक्षा कर बैठता है। लेकिन विफलताओं के कारण जब वह हारने लगता है तब स्त्री सब कुछ भुलाकर उसे सांत्वना देने से पीछे नहीं हटती। यही उसकी विशेषता है। राधा भी थके हुए, हताश, अकेले कनु के साथ खडी रहती है- "तुमने मुझे पुकारा था न!/मैं पगडंडी के कठिनतक मोड़ पर /तुम्हारी प्रतीक्षा में/ अडिग खड़ी हूं, कनु मेरे!"[9]

राधा को युद्ध मे कोई सार्थकता दिखाई नहीं देती। उसके लिए वह सिर्फ एक विनाश का तांडव है। उसे भरोसा है अपने कनु पर। तभी वह कनु से प्रश्न करती है। उसीसे उत्तर सुनने की उम्मीद करती है। "व्यक्ति की उपलब्धि की सार्थकता के बिना दायित्व की व्याख्या करने वाले शब्द अर्थहीन है। इसीलिए राधा इन शब्दों की व्याख्या के स्थान पर कृष्ण की वाणी को अधिक महत्वपूर्ण मानती है।"[10]

निष्कर्ष:

युद्ध और प्रेम में सत्य प्रेम को ही माना जाएगा। क्योंकि प्रेम में कोई दुविधा नहीं होती, वह निश्चल होता है, प्रेम एक अनुभूति है। जिसे राधाने जिया है। लौकिक स्त्री-पुरुष संबंधों को समझने का प्रयास भी कनुप्रिया में किया गया है। स्त्र-पुरुष के अनुरागात्मक संबंधों का सूक्ष्म दृश्यांकन भारती जी ने किया है। मिथक, साहित्य और कनुप्रिया लेख में संतोष कुमार चतुर्वेदी कहते हैं "प्यार की भाषा सहज लगती है। लगने के बावजूद सहज होती नहीं। प्यार समर्पण मांगता है। समर्पण चाहता है। इसमें कहीं भी प्रतिशोध नहीं होता। यह रचनात्मकता से भरा होता है। इसमें सृजन की संकल्पना होती है।"[11] कोई भी परिस्थितियाँ हो, अपने प्रिय के प्रति ही क्यों न हो स्त्री को प्रश्न करने का हक है। पुरुष को भी उसके सवालों का समाधान करने में कोई अरुचि

या झिझक नहीं होनी चाहिए। तभी तो परंपरा के साथ चलते हुए भी स्त्री-पुरुष के रिश्तें में एक नई सकारात्म सोच के साथ विश्वास की पक्की नींव का निर्माण होगा। रिश्तों को स्वार्थो से परे रखकर ही निभाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. डॉ. हरिचरण शर्मा, धर्मवीर भारती का काव्य सृष्टि और दृष्टि, मलिक एंड कंपनी, 2007, पृ.सं 84
2. धर्मवीर भारती, कनुप्रिया, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, तीसरा प्रकाशन 2021, पृ.सं 25
3. सुलमा बाजीराव पाटील, कनुप्रिया: एक मूल्यांकन, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1981, पृ.सं 42
4. धर्मवीर भारती,कनुप्रिया, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, तीसरा प्रकाशन 2021, पृ.सं 60
5. वहीं, पृ.सं 66
6. महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियाँ, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2008 पृ.सं 29
7. सुलमा बाजीराव पाटील, कनुप्रिया: एक मूल्यांकन, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1981, पृ.सं 35
8. धर्मवीर भारती, कनुप्रिया, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, तीसरा प्रकाशन, 2021 पृ.सं 37
9. वहीं, पृ.सं 82
10. डॉ. हरिचरण शर्मा, धर्मवीर भारती का काव्य सृष्टि और दृष्टि, मलिक एंड कंपनी, 2007, पृ.सं 78
11. सं. दिनेश कुमार, कनुप्रिया एक पुनः पाठ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2023, पृ.सं 41

****